Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 10 | OCTOBER 2023

मारवाड़ के राजघराने में विवाह संस्कार के दस्तूर और रीति-रिवाज

डॉ. अनिला पुरोहित [1] | हीरालाल [2]

[1] प्रोफेसर, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर.

[1] शोधार्थी, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर.

ABSTRACT:

मारवाड़ के राजघराने में विवाह संस्कार एक प्रमुख संस्कार होता था। विवाह संस्कार में विभिन्न प्रकार के दस्तूर एवं रीति-रिवाजों की परम्परा थी, जिसमें भारतीय संस्कृति की झलक दिखाई देती थी। विवाह सम्बधों के माध्यम से राजनीतिक सम्बधों को सशक्त किया जाता था जिससे सैन्य सहायता भी प्राप्त होती थी। विवाह में कई प्रकार के दस्तूर प्रचलित थे जिसमें इकेवड़ा दस्तूर एवं दौवड़ा दस्तूर प्रमुख थे। विवाह संस्कार का श्रीगणेश सगाई की रस्म से होता था। जिसमें वधू पक्ष की ओर से वर पक्ष को सगाई का नारियल भेजा जाता था। सगाई के पश्चात् शादी का मुहूर्त अर्थात् 'सावा' राजजोशी के द्वारा निकाला जाता था। विवाहोत्सव में मुहूर्त निकालकर विनायक स्थापना की जाती थी। एक विनायक चांदी का तो दूसरे विनायक प्रचलित परम्परा के अनुसार कुम्हार के यहां से लाया जाता था। इसके पश्चात् माया माण्डना की प्रथा सम्पन्न होती थी और देवी-देवताओं की स्तुति हेतु राती-जोगा की परम्परा का निर्वाह किया जाता था। मारवाड़ के राजपरिवार में राजकुमार एवं राजकुमारियों को बान बिठाने से विवाह सम्बधी सारे दस्तूर एवं रीति-रिवाजों की शुरूआत होती थी। इस दस्तूर में पाट बिठाकर घी पिलाया जाता था एवं तेल पीठी लगाने की परम्परा होती थी। बतीसी दस्तूर मायरे से सम्बधित होता था। रानी के पुत्र या पुत्री के विवाह पर रानी के पीहर पक्ष की तरफ से विवाह से एक दिन पूर्व मायरा लाया जाता था। मारवाड़ के राजघराने की राजकुमारी के विवाह के अवसर पर बारात मेहरानगढ़ दुर्ग में आती थी। वर पक्ष की ओर से वधू के लिए पड़ला लाया जाता था। दूल्हे के द्वारा तोरण दस्तूर को प्रचलित परम्परानुसार पूर्ण किया जाता था। वर एवं वधू के हथलेवा रस्म के पश्चात् वैदिक विधि विधान से फेरों की रस्म सम्पूर्ण रीति-रिवाज के साथ सम्पन्न की जाती थी। वधू का कन्यादान कर रोकड़ का दस्तूर किया जाता था। वर एवं वधू के डेरे में आने पर मांडा बरसाने का रीति-रिवाज होता था। मारवाड़ के राजपरिवार में विवाह के बाद कुलदेवी और देवी-देवताओं के जात देने की विशिष्ट परम्परा भी प्रचलित थी।

KEYWORDS:

विवाह, वर, वधू, दस्तूर, मुहूर्त, विनायक, बारात, रीति-रिवाज।

प्रस्तावना

मारवाड़ के राजघराने में भारतीय संस्कृति के सोलह संस्कारों की मान्यता रही है। इन सोलह संस्कारों में विवाह संस्कार एक प्रमुख संस्कार है। मारवाड़ के राजपरिवार में विवाह संस्कार को अत्यन्त सम्मानित स्थान प्राप्त था। विभिन्न प्रकार के रीति-रिवाज एवं प्रथाएँ विवाह संस्कार के चारों ओर केन्द्रित थे। विवाह में किये जाने वाले रीति-रिवाजों एवं कर्मकाण्डों में पुत्र जन्म की कामना, सुखद गृहस्थ जीवन की आवश्यकता तथा पारिवारिक जीवन के आदर्श प्रतिबिम्बित रहते थे। मारवाड़ राजघराने में बहुविवाह राजनीतिक आवश्यकता थी। जोधपुर के महाराजाओं के विवाह जयपुर, जैसलमेर, बूंदी, उदयपुर एवं जामनगर जैसे बड़ी रियासतों में हुए और छोटे जागीरदारों के साथ भी वैवाहिक सम्बध स्थापित किये थे। जयपुर, जैसलमेर, उदयपुर एवं बूंदी ऐसे राजघराने थे जहां विवाह निश्चित होने पर, विवाह के लिए बारात जोधपुर से प्रस्थान कर उन राज्यों तक जाती थी। विवाह से राजनीतिक सम्बधों को मजबूत किया जाता था। युद्ध के समय इन सम्बधियों से सैनिक सहायता प्राप्त होती थी। विवाह सम्बध एक ही खांप (कुल) में नही होते थे। राठौड़ खांप का पुरूष, राठौड़ वंश और उसकी शाखा की कन्या से विवाह नही कर सकता था, परन्तु राजपूत जाति के अन्य वंशों जैसे कच्छवाह, भाटी, सोढ़ा, चैहान, सिसोदिया, शेखावत इत्यादि में विवाह करते थे।

विवाह योग्य कन्या का पिता महाराजा को नारियल राजपुरोहित के साथ भिजवाता और यदि नारियल को स्वीकार कर लिया जाता तो महाराजा को लग्न पत्रिका भेज कर बारात लेकर आने का निमंत्रण दिया जाता था। विवाह के कई प्रकार थे जैसे डोला विवाह, खांडा विवाह इत्यादि। विवाह में कई प्रकार के दस्तूर भी प्रचलित थे। जैसे इकेवड़ा दस्तूर, दौवड़ा दस्तूर इत्यादि। इकेवड़ा दस्तूर में जोधपुर से बारात अन्य राजवंश में जाती या अन्य राजवंश से बारात जोधपुर में आती। दोनों राजपरिवारों में एक साथ, एक समय विवाह सम्पन्न नही हो सकता था। यह दस्तूर उदयपुर राजवंश वालों में था। दौवड़ा दस्तूर में दोनों राजपरिवार एक निश्चित स्थान पर एक साथ अपनी बारातों को डेरों में लाकर विवाह सम्बध स्थापित कर लेते थे। वि.स. 1870 के भादवा सुद 8 एवं 9 के दिन जोधपुर के महाराजा मानसिंह और जयपुर के महाराजा जगतसिंह के मध्य विवाह का दौवड़ा दस्तूर सम्बंध कायम किया गया। जोधपुर के महाराजा मानसिंह का डेरा किशनगढ़ के इलाके रूपनगर में और जयपुर के महाराजा जगतसिंह का डेरा जयपुर के इलाके गाँव मखे में हुआ। रूपनगर और मखे के बीच तीन कोस की दूरी थी।

विवाह से सम्बधित रीति-रिवाजों की शुरूआत सगाई द्वारा प्रारम्भ होती थी। सगाई की रस्म में सबसे पहले सगाई का नारियल भेजा जाता था। वि.सं. 1765 को भादवा सुद 5 को मारवाड़ के महाराजा अजीतसिंह की पुत्री सूरजकंवर के सगाई का नारियल जयपुर के महाराजा जयसिंह के लिए भेजा गया था। जिसमें नारियल दो सोने एवं चांदी से मंढ़े हुए, ग्यारह सुपारियाँ चांदी से मंढ़ी हुई, ग्यारह सुपारियाँ सोने से मंढ़ी हुई इत्यादि सामग्री भी भेजी गई। सगाई के शुभ अवसर पर महाराजा जयसिंह के केसर का तिलक लगाकर मोतियों के अक्षत पुरोहित द्वारा चिपकाये गये। वि.सं. 1830 मगसर सुद 8, के दिन जोधपुर के महाराजा विजयसिंह की पुत्री की सगाई का नारियल जयपुर के पृथ्वीसिंह को भेजा गया। इसके लिए जोधपुर के महाराजा विजयसिंह ने पृथ्वीसिंह को खरीता लिखा इसमें सगाई का नारियल भेजने और मुहूर्त के अनुसार कार्य सम्पन्न करने हेतु लिखा गया।

इसी प्रकार राजकुँवर की सगाई पर सगाई की सामग्री लेकर आये लोग जुलूस के साथ दुर्ग में आते थे। भगतणियाँ, तवायफें एवं पातरियाँ इनके साथ नाच गाना करती चलती थी। दौलतखाने में बिछायत होती थी। चौकी के ऊपर गद्दी रखी जाती, जहां राजकुँवर मुहूर्त के अनुसार बैठते थे। राजकुँवर के तिलक लगाकर सगाई का नारियल हाथ में दिया जाता था। सगाई में साथ आई सामग्री कपड़ा, रूपया, मोहर, मेवा, पान के बीड़े इत्यादि नजर किये जाते थे। नजर निछरावल भी होती थी। सगाई का नारियल लेकर आने वाले लोगों को सिरोपाव एवं कड़ा मोती विदाई में भेंट किया जाता था। जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह द्वितीय के पुत्र सरदारसिंह के साथ अपनी पुत्री लक्ष्मण कँवर का रिश्ता तय करने के लिए बूंदी के रावराजा रामसिंह जोधपुर पधारे थे। रामसिंह ने सरदारसिंह को अपना जँवाई बनाने के लिए गोनारूपा का नारियल, सोने की मोहर एवं रोकड़ रूपये दिये थे। वि.सं. 1848 के आषाढ़ में जोधपुर के राजकुँवर भीमसिंह की सगाई जैसलमेर के रावल मूलराज की पोती से हुई तब सगाई का नारियल जैसलमेर से आया। सगाई के कार्यक्रम के पश्चात् भोज का आयोजन हुआ जिसमें लापसी बनाई गई। सर्वप्रथम विनायक और नागणेचिया माता के प्रसाद चढ़ाया गया। चामुण्डा माता के आभूषण भेंट किये गये और ब्राह्मणों को भोजन कराया गया।

सगाई होने के पश्चात् शादी के लिए राजजोशी के द्वारा शादी का मुहूर्त जिसे 'सावा' कहते थे,

निकलवाया जाता था। राजजोशी के द्वारा लग्न का शुभ मुहूर्त निकालकर नारियल को मौली से बांधकर साथ में पीले चावल, सुपारी और चांदी का सवा रूपया या सवा ग्यारह रूपये रखे जाते थे। लग्न पत्रिका को लेकर के राजपुरोहित के साथ नाई भी जाता था। विवाह के निमंत्रण पत्र कुंकुम पत्री को अन्य राजपरिवारों में भेजा जाता था।

विवाह के 5, 7 या 11 दिन पूर्व विवाह का विनायक स्थापित किया जाता था। गणेश मूर्ति लेने के लिए जोशी पूजा का थाल सजाकर कुम्हार के यहां जाते थे। पाग, दुपट्टा और नगद रूपये नेग स्वरूप कुम्हार एवं कुम्हारी को भेंट किए जाते थे। विवाह के उत्सवों में विनायक स्थापना का मुहूर्त निकालकर मुहूर्त के अनुसार विनायक स्थापना की जाती थी इसमें पूजा का एक विनायक तो चांदी और दूसरा रीति-रिवाज के अनुसार कुम्हार के यहां से लाया जाता था। इस शुभ अवसर पर नववधू को नजर निछरावल के रूपये भी दिये जाते थे।

विनायक की स्थापना के बाद वधू द्वारा मेंहदी भरे हाथों के निशान दीवार पर लगवाये जाते थे जिसे माया माण्डना कहा जाता था। माया की पूजा के बाद में होम का आयोजन किया जाता था। इस दिन की रात्रि में देवी-देवताओं की स्तुति हेतु राति-जोगा दिया जाता था। विनायक के बाद मुहूर्त के अनुसार नगारखाने की पूजा होती थी।

विवाह के रीति-रिवाजों में बान बिठाने का दस्तूर काफी महत्वपूर्ण होता था। राजकुँवरी के बान बैठने के दस्तूर से विवाह के सभी कार्य प्रारम्भ हो जाते थे। इस दस्तूर में केवल स्त्रियाँ ही हिस्सा लेती थी। बान बैठने वाली राजकुँवरी लाल या केसरिया पोशाक धारण करती थी। उनके हाथों में कांकण डोरे बांधे जाते थे। राजकन्या को पाट पर बिठाकर घी पिलाया जाता था और उसके पश्चात् तेल पीठी लगाने का रिवाज था। राजकुँवरी पीठी चढ़ाने के बाद कही भी बाहर नही जा सकती थी।

बतीसी दस्तूर मायरे से सम्बधित होता था। विवाह के एक दिन पूर्व मायके वाले मायरा लाते थे और गाजे बाजे के साथ मायरा बांधाया जाता था। जिस रानी के पुत्र या पुत्री का विवाह होता था उसके पीहर से मायरा (भात) आता था। मायरे में गहने, रोकड़, कपड़े, मिठाइयों के थाल, पान के बीड़े, इत्र एवं घोड़े होते थे। बारात पुरे लवाजमें के साथ मेहरानगढ़ दुर्ग में आती थी, दूल्हा हाथी पर सवार हो कर आता था। बारात फतेहपोल से दुर्ग में प्रवेश करती बारातियों का छत्र पुष्पमालाओं के द्वारा स्वागत किया जाता था। मारवाड़ में बारातियों का स्वागत केसर के पानी के छिड़काव से भी किया जाता था।

बारात के साथ वधू के लिए पड़ला आता था, पड़ले में वधू के लिए गहने, कपड़े, मिठाई, सुहाग, चूड़ा एवं मेवे आदि होते थे। राजकुँवरी को पड़ले में आई पोशाक धारण करवाई जाती थी और विनायक के समक्ष बिठाकर चूड़ा एवं मूठिया धारण करवाया जाता था। दूल्हे द्वारा किले की पोलों पर तलवार और छड़ी से हाथी पर बैठकर तोरण दस्तूर का रिवाज किया जाता था। दूल्हे के हाथ में तलवार एवं एक हरी डाली होती थी। तोरण दस्तूर के पश्चात् दूल्हे को चांदी की चौकी या बाजोट पर खड़ा करके सासू आरती की जाती थी। बाड़ी के महलों में दूल्हन के पल्ले को दूल्हे के दुपट्टे से बांध कर गठजोड़ा कर मंडप में बिठाया जाता था।

वर एवं वधू के दांये हाथ की हथेली के बीच मेंहदी रखकर हाथ परस्पर जोड़कर हथलेवा की रस्म के साथ वैदिक क्रिया से होम कर फेरे लिए जाते थे और कन्यादान किया जाता था। कन्यादान में रोकड़ एवं गहने आदि दिये जाते थे। फेरों के बाद हथलेवा छूटने के समय कुटुंबी कन्यादान में रोकड़ दस्तूर देते थे। कन्यादान के समय महाराजा एवं महारानी द्वारा सम्मिलित रूप से हाथ पर जल लेकर गऊ दान का रिवाज था। हथलेवा छूटने से पहले चौथे फेरे के बाद वर वधू के मांग भरता था। सासू के द्वारा चंवरी में जँवाई की आरती उतारी जाती थी। अपने पल्ले को छुड़ाने के लिए सासू के द्वारा जँवाई को रोकड़ रूपये का नेग दिया जाता था। चंवरी से विदाई के समय ड्योढ़ी की पूजा बाईजीलाल द्वारा करवाने की परम्परा रही है। महाराजा और महारानी के द्वारा विदाई के समय पुत्री को अखंड सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दिया जाता था। गीतेरणियों द्वारा विदाई के गीत गाये जाते थे। बाईजीलाल की खोल भराई का दस्तूर बारात के डेरे पर किया जाता था। दूल्हा और दूल्हन के बारात के डेरे में आने पर बारातियों के द्वारा मांडा बरसाने का दस्तूर किया जाता था। वर रात को जहां विश्राम करते थे। वहां पर परम्परानुसार ढ़ोली पूरी रात गीत गाते थे। जँवाई द्वारा भोजन के पश्चात् उस थाल में रोकड़ दस्तूर करने का मारवाड़ के राजघराने में रिवाज होता था।

शादी के दूसरे दिन जँवाई को कंवर कलेवे के लिए बुलाया जाता था और महारानी जँवाई को नारियल के साथ रूपये भेंट करती थी। कंवर कलेवे के बाद में वर और वधू को जुआ-जुही खेलाया जाता था। मारवाड़ के राजघराने में विवाह उत्सव पर कुलदेवी और देवी-देवताओं की जात देने का रिवाज था। कुलदेवी और देवी-देवताओं की परिक्रमा, स्तुति एवं भेंट पूजा किये जाने को जात देना कहा जाता था। विवाह के अवसर पर विशिष्ट भोज का आयोजन किया जाता था। अजीतसिंह की पुत्री सूरजकंवर के विवाह के अवसर पर भोज का आयोजन किया गया था। राजकुमारियों को दिये जाने वाले दहेज का प्रदर्शन बारात वालों के सामने किया जाता था। किले के दौलतखाना चौक एवं श्रृंगार चौक में दहेज की सामग्री- आभूषण, पोशाके, चांदी, पीतल, तांबे एवं कांसे के बर्तन, बाजोट, पंलग, मसनद ,गद्दे, तकिये, बिस्तर, संदूक, पालकियां, रथ, घोड़े, हाथी, दासियों इत्यादि का प्रदर्शन किया जाता था।

राजकुमार एवं राजकुमारियों के विवाह संस्कार के रीति-रिवाज लगभग समान ही होते थे। विवाह में जाने से पूर्व वर विशेष प्रकार की पोशाक पहनते थे और अनेक प्रकार के कीमती आभूषण धारण करते थे। वर जनानी ड्योढ़ी के महलों से बाड़ी के महलों में जाते, जहां कई प्रकार के धार्मिक रीति-रिवाजों को सम्पन्न किया जाता था। जनाना ड्योढ़ी की प्रमुख पोल से विवाह की सवारी सजाई जाती थी। विवाह कर जब वर, वधू के साथ वापस लौटते तो उन्हें शहर के समीप लगे डेरों में ठहराया जाता उसके पश्चात् मुहूर्त के अनुसार महल में प्रवेश करवाया जाता था। वि.सं. 1823 में महाराजा विजयसिंह विवाह करके पधारे और राईका बाग डेरे में दाखिल हुए। तत्पश्चात् राईका बाग से जालोरी दरवाजे होते हुए मेहरानगढ़ दुर्ग में पधारे थे। ससुराल में आने पर नवविवाहिता राजघराने में सम्बन्धित बड़े लोगों के चरण स्पर्श कर 'पगेलागणी' की रस्म अदा करती थी। पगेलागणी पर वधू को नगद रूपये दिये जाते थे।

मारवाड राजघराने में वर एवं वधू के विवाह कर मेहरानगढ़ दुर्ग में लौटने पर आरती उतारी जाती थी एवं उन्हें बार रोका जाता था। 'बार रोकने' का नेग देने पर उन्हें महल में प्रवेश करने दिया जाता था। मर्दाना ड्योढ़ी में महाराजा की नजर निछरावल का दस्तूर सम्पन्न किया जाता था, जो की सरदार, मुत्सद्दी एवं अन्य लोग करते थे। जनाना ड्योढ़ी में रानी की मुंह दिखाई पर नेग दिये जाने का रिवाज था। जिसमें रानियों एवं मांजी साहिबा के द्वारा नेग का दस्तूर सम्पन्न किया जाता था।

निष्कर्ष-

मारवाड़ के राजपरिवार में विवाह संस्कार हर्षोल्लास एवं खुशी के साथ सम्पूर्ण धार्मिक परम्परा और रीति-रिवाजों के साथ सम्पन्न होता था। विवाह के माध्यम से राजनीतिक सम्बधों को भी सशक्त किया जाता था। विवाह के पश्चात् वैवाहिक जीवन में संतान प्राप्ति एवं सुखद गृहस्थ जीवन की कामना की जाती थी। मारवाड़ के राजघराने में विवाह के अवसर पर भव्यता के दिग्दर्शन भी होते थे।

REFERENCES

1. डॉ. वसुमती शर्मा, राठौड़ राजवंश के रीति-रिवाज, पृ. 41
2. जोधपुर ब्याव बही सं. 1, वि.सं. 1801 पंत्राक 54, रा.रा.अ. बीकानेर
3. जोधपुर राज्य री रीत किरियावर री बही, पंत्राक रा.शो.सं. चैपासनी
4. लक्ष्मीकुमारी चुण्डावत, राजस्थान के रीति-रिवाज, पृ. 174
5. खांडा विवाह बही सं. 832, म.मा.पु.प्र. जोधपुर
6. डॉ. किरण शेखावत, जनाना ड्योढ़ी, पृ. 87
7. सूरजकंवर रे ब्याव री बही सं. 833, म.मा.पु.प्र. जोधपुर पृ. 52
8. जनाना ड्योढ़ी बही सं. 833, पंत्राक 33, म.मा.पु.प्र. जोधपुर
9. जोधपुर राज्य हकीकत बही सं. 2, पंत्राक 270, रा.रा.अ. बीकानेर
10. जोधपुर राज्य ख्यात सं. 25626, पत्रांक 194, रा.प्रा.वि.प्र. जोधपुर
11. धर्मपाल शर्मा, मेवाड़ संस्कृति एवं परम्परा, पृ. 47
12. जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ. 76
13. ब्याव री बही सं. 832, पत्रांक 12-13, म.मा.पु.प्र. जोधपुर
14. जगदीश सिंह गहलोत, जोधपुर राजघराने में ब्याव रो हाल, पृ. 27-29